International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: (RJIF 5.22)
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue2; March 2016; Page No. 11-13

पचपन खम्भे लाल दीवारें: प्रेम और पारिवारिक दायित्व के द्वन्द्व में फँसी नारी की व्यथा

डॉ. अमिता

तदर्थ प्राध्यापक, मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रस्तावना

उषा प्रियम्वदा का उपन्यास 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श का एक उत्कृष्ट उपन्यास है। आज भी यह उपन्यास प्रासंगिक है क्योंकि परिस्थितियां बहुत नहीं बदली हैं। इस उपन्यास में उषा प्रियम्वदा में सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों की विकटताओं के बीच नारी की ऊब, छटपटाहट और अकेलेपन की स्थितियों को सहजता के साथ उभारा है। घर की समस्याओं के दबाव नारी की शारीरिक–मानसिक आवश्यकताओं पर हावी रहते हैं जिनके बीच पफँसी एक नारी निकल नहीं पाती। यह समाज में रहने वाली आज की नारी एक ऐसी समस्या हैं जिसे पूरी सच्चाई के साथ लेखिका ने चित्रित किया है। सारा उपन्यास सुषमा के आस–पास घूमता है। वह तैंतीस वर्ष की कॉलेज में इतिहास पढ़ाने वाली अध्यापिका है। उसे लगता है कि जीवन बहुत आगे जा चुका है। उपन्यास में एक स्थान पर वह सोचती है–''जीवन में पहली बार उसे उन खोये हुए वर्षों का दुख था। जीवन की भागदौड़ और आजीविका के प्रश्नों में चुपचाप विलीन हो गए वे वर्ष–– और अब तो उसके चारों ओर दीवारें खिंच गई थी, दायित्व की, कुंठाओं की, अपने पद की गरिमा और परिवार की।'' [1]

सुषमा को प्रेमी अथवा पति की आकांक्षा न थी पिफर भी उसका मन कभी–कभी विचलित हो उठता था–''पर कभी–कभी उसका मन न जाने क्यों डूबने लगता है। अपने परिवार का सारा बोझ अपने ऊपर लिए सुषमा काँपने लगती। तब वह चाह उठती कि दो बाहें उसे भी सहारा देने को हों.... ।'' [2]

अपने मन की पीड़ा लिए हुए जब नील से उसका परिचय होता है और नील उसके बारे में जानने को उत्सुक होता है तो वह कहती है–''उम्र तैंतीस बरस, घर की गरीब, टीचर और कुछ जानना चाहते हैं...और सुषमा की आँखों में आँसू भर आए...जैसे ओस की दो बूंदें। [3]

कॉलेज में पढ़ाते हुए उसे वार्डन जैसी जिम्मेदारी दी जाती है। लेकिन वह महसूस करती है ''अब वह उस स्थान पर पहुँची है, जहाँ पीछे मुड़कर देखने से आशाएँ बड़ी खोखली नजर आती हैं, और यथार्थ की प्रखरता में कोमल स्वप्न कुम्हला जाते हैं। [4]

कामकाजी अविवाहिताएँ अपने पारिवारिक सम्बंधें–माता–पिता और बहन भाइयों की जिम्मेदारियों से दबी अपनी निजता को बलि कर कुंठित और बेबसी का जीवन जीने को मजबूर नारियां आज भी सुषमा की तरह मौजूद हैं। अपने जिस घर में पली–बढ़ी ये युवतियाँ अपने परिवार के लोगों का कोई सहारा न पाकर स्वयं अपनी इच्छाओं का गला घोंटने के लिए विवश हैं। सुषमा भी ऐसी ही ऐसी एक पात्रा है। त्याग, बलिदान का संस्कार लिए परिवार के सदस्यों के लिए कुछ कर गुजरने की संभावनाओं के बीच ये अपने को गला देती है। धीरे–धीरे उम्र आगे जाने लगती है और शरीर अपना आकर्षण खोता जाता है। इसका परिणाम यह होता है ऐसी नारियों के हृदय में कुंठाओं की परतें सघन होती जाती हैं। उपन्यास के अन्तर्गत सुषमा, मिस शास्त्री, मीनाक्षी, स्वाति जैसी नारियों की तकलीपफ कुछ ऐसी ही हैं। सुषमा उपन्यास के अन्तर्गत मांगलिक अवसरों पर पर कुछ खिन्न सी रहती है–''यदि कुछ परिस्थितियों वश सुषमा का विवाह न टल गया होता तो आज उसके भी सब कुछ होता–एकांत शामों का साथी, घर–मोटर बच्चे... ।'' [5]

उसका विवाह वकील साहब के बेटे नारायण के साथ तय होने वाला था जो नहीं हो पाया। वकील साहब की पत्नी ने तो हठ किया भी पर वकील साहब नहीं माने और वह इस घटना से पीड़ित रही–''वह अनंत रातें आँचल मुँह में ठूसकर रोते बीतीं। कोई कितना रो सकता है, इसका अनुमान उसे न था।'' [6]

नारायण के बेटे के जन्मोत्सव में वह जाती है और बिना खाये–पिये लौट आती है क्योंकि ''उसके मन में बहुत पुरानी एक चोट पिफर से टीस उठी। बचपन से एक स्वप्न मन में संजोया था जिसका केन्द्र नारायण था।'' [7]

उपन्यास में मिस शास्त्री भी अविवाहिता है और सहज जीवन की ओर अग्रसर न हो पाने के कारण कुंठित है ''मिस शास्त्री संस्कृत पढ़ाती थी। संस्कृत साहित्य के सम्पर्क से उनमें रस के प्रति रुचि तो थी पर उस रसोपलब्धि का साध्न न था, वह जीवन और संसार के प्रति कटु होती जा रही थीं। [8]

इस सहज जीवन से वंचित होने के कारण मिस शास्त्री एक कटुता का व्यक्तित्व बनाने रहती है–''मिस शास्त्री का समय इसी में बीतता है। जाने रात में सोती भी हैं या पहरेदारी की करती रहती हैं कि कौन कितने बजे आया इनसे सब पूछ लो, किस लड़की की मैत्री किस छात्रा से है, कौन अध्यापिका घर कितने रुपए भेजती है. .. ।'' [9]

उपन्यास में मिस शास्त्री के संबंध में लेखिका कहती है ''तप्त धरती की तरह मिस शास्त्री, जिनकी निराशाओं ने उनका जीवन के प्रति पूरा दृष्टिकोण विकृत कर दिया। जिस वस्तु के लिए वह तृषित रही, शायद उसे हेय तथा निकृष्ट समझ उन्होंने इध्र से अब मुँह मोड़ लिया था। वह समस्त संचित स्नेह उन्होंने अपनी बिल्ली पर उँड़ेल दिया था।'' [10]

मीनाक्षी अपने भावी जीवन के बारे में कुछ अलग प्रकार से सोचती थी '' वह सदा अपने भावी पति के बारे में सोचा करती थी। उसका स्वप्न पुरुष किसी विदेश की यूनिवर्सिटी से शिक्षा प्राप्त सुसंस्कृत था।'' [11]

अविवाहित जीवन से ऊब चुकी मीनाक्षी के हृदय में इंटलैक्चुअल व्यक्ति की इच्छा थी लेकिन वह नहीं मिलता तो ऊब, घुटन, संत्रास से मुक्ति पाने के लिए बिजनेसमैन से शादी के लिए तैयार हो जाती है। वह सुषमा को कहती है ''मैं अच्छी तरह से समझ रही हूँ कि दिनेश जी का और मेरा संसार बिल्कुल भिन्न है....वह हमेशा काकटेल पार्टी, डिनर एवं डांस तथा ब्रिज की बातें करते हैं....मैं अपने इस जीवन से बुरी तरह से ऊब गई हूँ....पर जब एक द्वार मेरे सामने खुल रहा है तो मैं उससे क्यों न निकल भागूँ।'' [12]

उपन्यास में मीरा दी सुषमा को समझाती है कि तुम अपना विवाह कर लो, ''तुम पिफर कभी–कभी उकता क्यों उठती हो? मीनाक्षी क्यों एक बिजनेसमैन से शादी करने जा रही है। जबकि उसने सदा ही एक इंटलैक्चुअल व्यक्ति की कामना की? दुर्गा क्यों हरेक को क्रिटिसाइज करती रहती है और इस बिल्ली को कलेजे से लगाए रहती है। ये सब उसी गहरे अभाव के सूचक हैं।'' [13]

काम की सहज स्वाभाविक भूख प्रत्येक स्त्री–पुरुष में होती है जिसके कारण व्यक्तित्व भी प्रभावित होता है–मिस शास्त्री, मीनाक्षी, स्वाति, सुषमा–सभी कहीं न कहीं इससे प्रभावित हैं। हरेक का व्यक्तित्व और संयम शक्ति अलग होती है। जहाँ सुषमा जैसी लड़कियां मर्यादा का ध्यान रख पाती हैं। वहीं स्वाति जैसी नहीं रख पाती है। और वह गर्भवती हो जाती है तथा अन्य संकटों का सामना करती है। नींद की गोलियाँ खाकर वह आत्महत्या का प्रयास करती है। स्वाति बंगला पढ़ाती है। वह अपने को इस स्थिति में संभाल नहीं पाती। कॉलेज की स्वाति की सहयोगी अध्यापिकाएं उसके इस क्रियाकलाप का उपहास बनाती है तो सुषमा को अच्छा नहीं लगता। वह कहती है ''ऐसी बात मिसेज पुरी, क्या आपको शोभा देती है? कुछ भी हो, स्वाति हममें से ही एक थी। आज आप उसे कह रही है, कल किसी और को कहेंगी।'' [14]

इसके पश्चात सुषमा क्रोध में आ जाती है और कहती है ''यदि आपको पता था कि स्वाति किसी परेशानी में है तो आपको सहायता करनी चाहिए थी। वह लड़की दूर देश में आकर अस्पताल में पड़ी है और आप।'' [15]

मीनाक्षी को भी स्वाति की घटना के संबंध में अध्यापिकाओं का व्यवहार खलता है ''दुनिया की यही रीति है सुषमा–दूसरे के पफटे में पैर अड़ाना सबको अच्छा लगता हैं। और हम बहुत प्रबुद्ध प्रगतिशील महिलाएँ बनने का दम भरती है।'' [16]

इसी स्वाति सेन की शादी हो जाती है वह अपने से काफी आयु के पुरुष का वरण करती है ''....स्वाति सेन की शादी हो गई है।'

'अरे कहाँ' सुषमा ने चौंककर पूछा

'वहीं कलकत्ता में। उसका वर कापफी आयु का है। पर बहुत अच्छी पोस्ट पर है।'

सुषमा इस सूचना को मन में उलटने–पलटने लगी। 'और उसका बेबी?' जैसे वह अपने आप से बोली।

'कुछ करवा लिया होगा' मीरा ने धीरे से कहा।'' [17]

यहीं सुषमा मीरा दी को नारी जीवन की समस्याओं को गहराई से विचार करते हुए कहती है

''जिन्दगी हमें तरह–तरह से छलती है मीरा दी।'' [18]

और यही मीरा ध्र सुषमा से उसके विवाह के बारे में पूछ बैठती है और नील की नीरू के साथ शादी का सवाल भी उठाती है जिसे सुनकर सुषमा घक् रह जाती हैं। यही सवाल एक बार सुषमा की माँ ने कृष्णा मौसी को चिट्ठी लिखकर भेजा था जब लड़की देखने वाले नीरू को अस्वीकार कर गए थे–''सुषमा के आगे पुस्तक खुली थी पर वह एक पंक्ति भी न पढ़ पाई थी। भौंरी को चौंके से निकलते देख उसने एकदम चौंककर कहा 'मुझे दे दो मैं छुड़वा दूंगी।....अपने ऑपिफस में आकर उसने कई बार खत को उलटा–पलटा और पिफर उसके छोटे–छोटे टुकड़े कर खिड़की के बाहर फेंक दिए।'' [19]

नील और सुषमा का प्रेम संबंध था लेकिन पारिवारिक दायित्व में फँसी वह कुछ निर्णय नहीं ले पाती। उसके अपने दायित्व बार–बार खींच लेते हैं। वह दुखी होकर नील को कहती है ''मैं....मैं आई कांट मैरी यू। तुम जानते हो नील.....पहली बात तो नील यह है कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ हैं। तुमसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबू, दो बहनें और भाई, सब मुझे ही करना है।'' [20]

नील ने हल्के से अपना हाथ उसके कंधे पर रखकर कहा 'वे जिम्मेदारियाँ मेरी भी होंगी। तुम्हारे भाई बहनों, सबके लिए सब कुछ वैसे ही होगा जैसे होता आया है।'' [21]

सुषमा उसकी इस गंभीरता से प्रभावित होती है ''उसके दृढ़ गंभीर चेहरे को देखती रही, नील के प्रति स्नेह की एक नई लहर उसके पाँव उखाड़ गई। मैं यह कैसे कर सकूंगी? इतना भार मैं कैसे इन कंधें पर रख दूँ...पिफर उसने कहा 'और कभी तुम भावावेश में किए गए इस निश्चय पर पछता उठे तो ?'' [22]

वास्तव में प्यार करने वाला यह नील सुषमा की मजबूरी को पूरी तरह से नहीं समझ सका । इसलिए वह कहता है ''क्या तुम्हें किसी और की प्रतीक्षा है, कोई ऐसा जोकि तुम्हारी नजरों में तुम्हारा पूरा मोल चुका सके....अब मैंने जाना कि तुम्हारे पास खूबसूरत चेहरे के अलावा एक बहुत व्यावहारिक बुद्धि और अपना भला समझने वाला दिमाग भी है।'' [23]

यह आरोप रखने वाला नील हॉलैंड चला जाता है। यहाँ एक प्रश्न उठता है कि प्यार की दिशा में बढ़ने वाले युवक सुषमा जैसी लड़कियों की बेवसी को क्यों नहीं समझ पाते और उन्हें उनकी सम्पूर्णता में पहचानने का प्रयत्न नहीं करते। मैं ऐसा समझती हूँ कि सुषमा की इस स्थिति के लिए नील जैसे लड़के ही जिम्मेदार हैं। आखिर सुषमा ने नील से कुछ छिपाया नहीं था। पिफर नील जैसे युवक सुषमा जैसी जिम्मेदार, आत्मनिर्भर, सुशील लड़की को समझने में कैसे भूल कर जाते हैं? उपन्यास में एक स्थान पर नील कहता है–''भई मेरे तो सिपर्फ एक सुषमा है वन एंड ओनली....तुम्हारी बात दूसरी है, संजय के लिए यह लेना है, नीरू के लिए साड़ी लेनी है। विनय का स्वेटर बुनना है..... ।'' [24]

यह ठीक है कि सुषमा की जिम्मेदारियाँ अध्कि हैं और नील की कम हैं तो ऐसी स्थिति में नील के लिए सुषमा जैसी जिम्मेदार लड़की के कंधें को सहारा देना सरल कार्य होता। परन्तु यह नील, नीरू की शादी में नहीं आता है यद्यपि सुषमा ने उसे बुलाया था। सुषमा के साथ उसे इस परिवार के साथ प्यार था तो उसने नीरू के विवाह में सम्पूर्ण भागीदारी क्यों नहीं निभाई, जो सुषमा का प्यार और विश्वास जीतने के लिए सबलता बनती।

मैं समझती हूँ कि सुषमा जैसी सुशील, जिम्मेदार, आत्मनिर्भर लड़की के सुखात्मक पहलुओं से ही नील जैसे लड़के प्यार करते हैं। अगर ऐसा नहीं था तो नील हॉलैंड क्यों भागता? एक तरफ नील कहता है कि विवाह के बाद सुषमा को नौकरी नहीं करने देगा। उसके भीतर का पुरुष सुषमा को किसी सीमा में बांध्ना चाहता है जबकि उसके लिए यह नौकरी अपने परिवार को सुरक्षित करने के लिए बहुत जरूरी है।

सुषमा को अपने कॉलेज की अध्यापिकाओं से भी अनपेक्षित व्यवहार मिलता है। सुषमा ने नीरू की शादी में मिसेज पुरी, रोमा, मिस शास्त्री सभी को बुलाया। सभी ने यह कहा–''सुषमा के अतिथियों ने आपस में कहा कि नील से संबंध तोड़कर उसने समझदारी का काम किया है। सुषमा भली युवती है, उसकी जिम्मेदारियाँ हैं। अभी ही उसने अपने प्रोविडेंट पफंड से ट्रण लेकर छोटी बहन के विवाह का प्रबंध किया है। इस आयु में ऐसे बचकाने रोमांस नहीं सोहते।'' [25]

यही समाज उसके भीतर की स्त्री की शारीरिक, मानसिक भूख को जानकर भी अनजान बनना चाहता है और उसे उसके कष्टों के बीच में पड़े रहने पर आनंदित होता है। यह समाज उचित समाधन नहीं तलाशता। उपन्यास में कृष्णा मौसी ही उसके विवाह के लिए चिंतित होती है।

सुषमा अपनी नौकरी बचाने के लिए प्रिंसिपल से कह देती है–''यदि उन्हें नील के कॉलेज आने पर आपत्ति है तो वह नहीं आएगा।'' [26]

सुषमा को अपने साथियों पर दुःख होता है जो उसका थोड़ा सा सुख भी नहीं देख पाते–''उसे सबसे अध्कि क्रोध था अपने सहयोगियों पर। उसने कभी किसी के व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप नहीं किया, कभी किसी किसी की बुराई नहीं की, पिफर भी उन्होंने प्रिंसिपल से उसकी रिपोर्ट कर दी और उसे अनैतिक आचरण के लिए उत्तरदायी ठहराया। [27]

कॉलेज में सहयोगी अध्यापिकाओं का व्यवहार सुषमा के साथ किसी प्रकार न्यायोचित नहीं है जो नील की उपस्थिति में सुषमा के घर पीछे के दरवाजे से घुस आती हैं। मिसेज राय चौधरी, मिसेज अग्रवाल, मिस शास्त्री, रोमा उससे सवाल करती हैं–

''यह नील तुम्हारे कोई रिश्तेदार हैं क्या? मिसेज अग्रवाल ने पूछा। सुषमा ने मस्तिष्क में बिजली सी कौंधी और वह इस आकस्मिक आगमन का तात्पर्य समझ गई।
''जी नहीं।''
'ऐसे ही मेल–जोल होगा', मिसेज अग्रवाल ने कहा।
'जी।'
'क्या करते हैं?'
'कुछ करते ही होंगे।'
वातावरण के तनाव को कम करने के लिए मिसेज राय चौधरी ने नकली ठहाका लगाया और कहा 'कोई कुछ भी करता हो, हमें क्या! हमारी तो एक लड़की थी, उसकी भी शादी हो गई।'' 28
ये उसके सहयोगी उसकी नौकरी छुड़वाने का षड़यंत्रा रचते हैं और प्रिंसिपल तक शिकायत पहुँचा देते हैं। वह उपन्यास में नील से कहती है
''प्रिंसिपल मेरा इस्तीपफा मांग रही है।''
.....क्यों?
नौकरी छोड़कर और क्या करूंगी?'' 29
सुषमा वार्डन है इसलिए छात्रावास में लड़कियों का ध्यान रखती हैं। लेकिन कुछ लड़कियाँ उसके साथ अनुचित आचरण करती हैं– ''हम लोगों पर अनुशासन रखती है। उस दिन रूनू और निकी के साथ सिनेमा चले गए तो पफाइन कर दिया और अपने लिए कुछ नहीं।''
'क्या हुआ?'' दूसरी ने पूछा
'हमें सब मालूम है। आधी रात को वापस लौटती है खूब मजे करती हैं'
'नहीं, मुझे विश्वास नहीं होता। इतनी स्वीट और सिम्पल हैं।'
'मत मानों। मिस डेविड ने अपनी आँखों से देखा है। मिस शास्त्राी भी जानती हैं। होस्टल की सभी लड़कियाँ झाँकर देख चुकी है...।'' 30
अपने बारे में लड़कियों की ऐसी बातें सुनकर सुषमा टूट जाती है– ''उसके गाल तपने लगे और उसका मन होने लगा कि धरती फटकर उसे निगल ले।.....उसे लगा कि उसकी सारी शक्ति निचुड़ गई है। न जाने कितनी देर तक वह वैसे ही निष्प्राण टिकी खड़ी रही।'' 31
ऐसी बातें सुनकर सुषमा को चक्कर आ जाते हैं मीरा दी उसे संभालती हैं। भौंरी को बुलाया जाता है–''सुषमा रो रही थी जैसे कोई उसका निकट का आत्मीय मर गया हो।'' 32
नील को वह कहती है ''मुझे दुख यह है कि नील मैंने इन लड़कियों के लिए कितना किया। जब तक कि कोई बहुत आवश्यक न हो, मैं दंडित नहीं करती। उन्हें प्यार से समझाती हूँ, उनकी सुख–सुविधओं का ख्याल रखती हूँ और उन्होंने मुझे यह दिया....मेरे कमरे में झाँका...।'' 33
नारी अपनी इन समस्याओं के लिए एक लम्बी कालावधि से वर्तमान समय में भी जूझ रही है। सुषमा, मीनाक्षी, स्वाति, शास्त्राी जैसी स्त्रिायों की समस्याएं किन्हीं दो–चार नारियों की समस्याएं नहीं है बल्कि अनेकानेक नारियों की समस्याएं हैं जिनका सामना आज भी कहीं न कहीं वे कर रही हैं। लेकिन मैं समझती हूँ कि समाधन की दिशा नारी को स्वयं खोजनी होगी। स्वयं ही नई राहें तलाश करनी होंगी, किन्हीं दूसरों से हम अपेक्षा नहीं कर सकते। हमें स्वयं को अन्दर और बाहर से मजबूत होना होगा और द्वन्द्वों से उभकर जीवन जीना होगा। द्वन्द्वों में पफंसा रहना जीवन नहीं हैऋ घुट–घुटकर जीवन नहीं जीना होगा।
काल कभी एक समान नहीं रहता। यही सुषमा नील से विवाह कर लेती और उसके साथ कुशलतापूर्वक व्यावाहिक सामंजस्य बिठाती तो हो सकता था कुछ वर्ष बाद उसके पिता के घर से भी कोई आर्थिक सबलता प्राप्त करके अपने सहारों का निर्माण कर लेता जिससे सुषमा की पारिवारिक जिम्मेदारी भी कम हो सकती थी। आशंकाओं से घिरे रहकर हर एक समस्या से अपने को घेरे में लेते रहना नारी को छोड़ना होगा और कुछ बोल्ड निर्णय लेने होंगे तभी सुषमा जैसी नारी आत्मपीड़न की शिकार होने से बच पायेगी।

संदर्भ

1. पचपन खम्भे लाल दीवारें–उषा प्रियंवदा पृष्ठ–34
2. वही पृष्ठ–34
3. वही पृष्ठ–41
4. वही पृष्ठ–10
5. वही पृष्ठ–33
6. वही पृष्ठ–48
7. वही पृष्ठ–47
8. वही पृष्ठ–10
9. वही पृष्ठ–11
10. वही पृष्ठ–78
11. वही पृष्ठ–34
12. वही पृष्ठ–51
13. वही पृष्ठ–78
14. वही पृष्ठ–36
15. वही पृष्ठ–36
16. वही पृष्ठ–37
17. वही पृष्ठ–81
18. वही पृष्ठ–81
19. वही पृष्ठ–104
20. वही पृष्ठ–134
21. वही पृष्ठ–134
22. वही पृष्ठ–135
23. वही पृष्ठ–135
24. वही पृष्ठ–89
25. वही पृष्ठ–142
26. वही पृष्ठ–142
27. वही पृष्ठ–143
28. वही पृष्ठ–113
29. वही पृष्ठ–134
30. वही पृष्ठ–119
31. वही पृष्ठ–120
32. वही पृष्ठ–121
33. वही पृष्ठ–123